भारतेन्दु-मण्डल के संस्कृत-लेखक और उनकी संस्कृत सेवा

प्रवीण कुमार मिश्र*

pkm.vns1981@gmail.com

सार

'भारतेन्दु मण्डल' की चर्चा आते ही प्रायः हिन्दी-भाषा तथा हिन्दी-साहित्य से सम्बन्धित भाव ही सामान्य पाठकों के मानस पटल पर अंकित होता है। किन्तु यह आश्चर्यजनक तथ्य है कि इस मण्डल के सदस्य हिन्दी से अधिक संस्कृत के ज्ञाता और सेवी रहे हैं। युग की अपेक्षा के अनुकूल इन्होंने संस्कृत-रचना-धर्मिता को उतना महत्त्व नहीं दिया जितना हिन्दी को। महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, श्रीदामोदर शास्त्री सप्रे, ठाकुर जगन्मोहन वर्मा, पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, गोस्वामी श्रीराधाचरण जी, पण्डित परमानन्द भट्ट आदि इस युग के वे विलक्षण संस्कृत-सेवी हैं जिन पर संस्कृत साहित्य का अनन्तकालीन इतिहास गर्व कर सकता है। प्रस्तुत शोधपत्र में 'भारतेन्दु-मण्डल' के उपर्युक्त कतिपय संस्कृत-सेवी सदस्यों के जीवन-वृत्त और उनकी संस्कृत-रचनाओं पर संक्षिप्त प्रकाश डाला गया है।

भारतेन्दु बाबू का काल हिन्दी-साहित्य की प्रारम्भिक उन्नति हेतु एक स्वर्ण-काल ही माना जा सकता है, क्योंकि इनके जन्म लेने से पूर्व एवं पश्चात् के दस वर्षों में ऐसे अनेकानेक उद्भट विद्वान् इस साहित्य-धरा को विभूषित करने लगे जो भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को समृद्ध करने में सक्षम थे। स्वयं भारतेन्दु बाबू की मण्डली में ही अनेक ऐसे विद्वान् सदस्य थे; जिनकी गति हिन्दी, संस्कृत, बंगला, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, अवधी, व्रज तथा विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं पर समान रूप से थी। हिन्दी के उत्तम छन्दों की रचना में सिद्धहस्त विद्वान् संस्कृत के छन्दों में भी उत्कृष्ट काव्य करने में दक्ष थे तथा जो बंगला के काव्यों एवं उपन्यासों का कुशल अनुवाद करने में निपुण थे वे ही कवि यथावसर उर्दू एवं अंग्रेजी आदि में भी अच्छी कविता करने का माद्दा रखते थे।

भारतेन्दु-मण्डल के प्रायः सदस्य संस्कृत-भाषा के अच्छे ज्ञाता एवं रचनाकार थे। बाबू साहब की मण्डली के उद्देश्यों को पूर्ण करने में तत्पर ये विद्वान् कविगण संस्कृत-साहित्य के प्रति अपनी रुचि और गति को रोकने में असमर्थ होने के कारण संस्कृत में भी लिखा करते थे। इनकी मण्डली में तो प्रायः सदस्य संस्कृत के अच्छे ज्ञाता हुए परन्तु उनमें से कुछ ही विद्वानों नें इस भाषा के साहित्य की श्रीवृद्धि में अपनी तत्परता दिखाई। स्वयं भारतेन्दु बाबू संस्कृत के अच्छे ज्ञाता थे और उनकी संस्कृत-रचनाएं आज भी उपलब्ध होती हैं। इनकी संस्कृत-रचनाओं में 'वार्ता संस्कृत' 'श्रीसीतावल्लभ स्तोत्र' तथा 'वर्षा विनोद' नामक संग्रहों में संस्कृत की दो कजली आदि की गणना की जाती है।[१]

'भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित' नामक पुस्तक में श्रीराधाकृष्ण दास जी लिखते हैं कि : "भारतेन्दु बाबू के निम्नलिखित संस्कृत-स्तोत्रों पर संस्कृत-टीका कवि लक्ष्मीराम कृत मुझे मिली है : **१.** संकर्षणाष्टकम् **२.** दनुजारिस्तोत्रम् **३.** वाराहस्तोत्रम् **४.** शिवस्तोत्रम् **५.** श्रीगोपालस्तोत्रम् **६.** भगवत्-स्तोत्रम् **७.** श्रीरामस्तोत्रम् **८.** श्रीराधास्तोत्रम् **९.** रामाष्टकम् तथा **१०.** कालियकालाष्टकम्। श्री राधाकृष्ण जी का अनुमान है कि इन ग्रन्थों के लुप्त होने का विशेष कारण यह ज्ञात होता है कि भारतेन्दु जी के अक्षर अच्छे नहीं होते थे, इसलिए

* संस्कृत प्रवक्ता, कृषक उपकारक इण्टर कॉलेज, सदरपुर, मुरादाबाद

१ देखें : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लेखक - श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - २०.

वे स्वयं पुर्जों पर लिखवाते और सुन्दर चित्र बनवाते थे। तब मूल प्रति का कुछ भी यत्न न होता और ग्रन्थ का शत्रु वही उसका चित्र हो जाता था।[१]

ध्यातव्य है कि रस विषयक इनकी अपनी एक अलग ही मान्यता रही है। इनके अनुसार नवरसों के अतिरिक्त अन्य चार रसों की भी स्थिति होती है, जिन्हें वात्सल्य, सख्य, भक्ति और आनन्द रस के अभिधान से अभिहित किया जाता है। इनके अनुसार इन चार रसों का भाव शृङ्गार, हास्य, करुण और शान्त रसादि नवरसों में से किसी में समाविष्ट नहीं होता, अतएव इन चारों को पृथक् रस मानना चाहिए। रस विषयक कल्पित इनकी अकाट्य मान्यताओं को स्वीकार करते हुए काशीराज ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह के सभापण्डित आचार्य ताराचरण तर्करत्न ने अपने 'शृङ्गार-रत्नाकर' नामक ग्रन्थ में लिखा है कि : **"हरिश्चन्द्रास्तु वात्सल्यसख्यभक्त्यानन्दाख्यमधिकं रसचतुष्टयं मन्वते"** आगे चलकर इन्होंने उदाहरण भी दिए हैं। विदित हो कि भारतेन्दु बाबू ने शृङ्गार रस के भी अनेक सूक्ष्म भेद गिनाए हैं। जैसे : ईर्ष्यामान के दो भेद, विरह के तीन भेद आदि। इसके अतिरिक्त नायिका भेद विमर्श के उद्देश्य से नायिकाओं के पाँच 'तदनुगर्विता' के आठ भेद सहित इनकी अनेक मान्यताओं को साहित्य-शस्त्र में ससम्मान स्वीकार किया जाता है।[२]

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र संस्कृत-भाषा के स्वयं एक अच्छे ज्ञाता एवं लेखक थे और इनकी मण्डली में भी श्री दामोदर शास्त्री सप्रे, ठाकुर जगमोहन वर्मा, सुकवि पण्डित अम्बिकादत्त व्यास, पण्डित सुधाकर द्विवेदी, रामकृष्ण वर्मा, केशवराम भट्ट, खड्ग- बहादुर मल्ल, श्रीनिवासदास, काशीनाथ खत्री तथा बालकृष्ण भट्ट सरीखे कुछ ऐसे अति उत्साही विद्वान् थे, जिन्होंने संस्कृत-साहित्य की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से आशातीत वृद्धि की।

भारतेन्दु-मण्डली के उपर्युक्त सदस्यों की संस्कृत-साहित्य-सेवा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने के क्रम में इस आलेख के माध्यम से यहाँ हम इस मण्डली के उन्हीं संस्कृत विद्वानों की कृतियों का संक्षिप्त परिचय मात्र देंगे जिन्होंने इस मण्डली के मूलभूत उद्देश्यों को पूर्ण करते हुए संस्कृत-साहित्य को समृद्ध किया :

१. श्री दामोदर शास्त्री सप्रे :

सप्रे साहब की रचनाएँ संस्कृत, मराठी तथा हिन्दी तीनों भाषाओं में मिलती हैं। उनके द्वारा रचित संस्कृत-व्याकरण पर **'देववाणी'** नामक प्रौढ़ ग्रन्थ; दो खण्डों में उपलब्ध होता है। **'कमलास्तव'** - सप्रे जी की इस रचना में ५४१ श्लोक हैं, जिनमें अधिकांश पद्य अनुष्टुब छन्द में रचे गए हैं और कुछ **'विद्यार्थी पत्रिका'** में क्रमशः छपे भी हैं। ध्यातव्य है कि शास्त्री जी के इसी ग्रन्थ के अन्त में **'गोविन्द-गंगा'** तथा **'दामोदर सरस्वती'** या **'विष्णुपदी'** भी संस्कृत पद्यों के रूप में संकलित है।[३]

२. ठाकुर जगन्मोहन वर्मा :

ठाकुर साहब हिन्दी-साहित्य में समस्यापूर्ति के लिए प्रसिद्ध थे और अपनी हिन्दी-कृतियों में प्रकृति का जो मनोहारी वर्णन इनके द्वारा कर दिया गया है, वह इनके समकालीन कवियों की कृतियों में शायद ही देखने को मिले। वस्तुतः वर्मा जी की संस्कृत-साहित्य के प्रति एक विशेष प्रकार की अभिरुचि थी। इन्होंने महर्षि कपिल कृत सांख्यसूत्रों का आर्या जैसे सुललित छन्द में अनुवाद किया और इसका नाम **'ज्ञान-प्रदीपिका'** रखा। सम्भवतः कपिल

---

[१] देखें : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लेखक - श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - ४२.

[२] भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, लेखक - श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - ६७-६८.

[३] भारतेन्दु मण्डल, लेखक - श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ -२२-२३.

कृत सांख्य-दर्शन की इस अमूल्य कृति पर इनका गभीर अध्ययन था, क्योंकि इस पर इन्होंने सटीक टिप्पणी तथा जोरदार आलोचना भी प्रस्तुत की है। संस्कृत-साहित्य के काव्य-ग्रन्थों यथा मेघदूत, हंसदूत, कुमारसम्भव तथा ऋतुसंहार आदि काव्यों का इन्होंने हिन्दी अनुवाद भी किया है।[१]

३. पण्डित अम्बिकादत्त व्यास :

व्यास जी की गणना भारतेन्दु-मण्डल के उन उत्साही सदस्यों में की जाती है; जिनका मुख्य उद्देश्य हिन्दी-भाषा को समृद्ध बनाने तथा उसका प्रचार-प्रसार करने में निहित था, परन्तु यह बात कथमपि अस्वीकार नहीं की जा सकती कि ये हिन्दी-भाषा के साथ-साथ संस्कृत-साहित्य के भी प्रकाण्ड विद्वान् थे। यद्यपि शोध एवं समीक्षा ग्रन्थों में इनके नाम से जिन शताधिक ग्रन्थों का परिचय प्राप्त होता है उनमें संस्कृत-साहित्य की अपेक्षा हिन्दी-साहित्य से सम्बद्ध ग्रन्थों की ही संख्या अधिक मिलती है, किन्तु आप मुख्यरूप से संस्कृत के ही आचार्य थे और संस्कृत में आपकी कृतियाँ स्वल्प होने पर भी अत्यन्त प्रौढ किञ्च प्राञ्जल हैं।

संस्कृत-भाषा पर बाल्यावस्था से ही असामान्य अधिकार होने के कारण अपनी अवस्था के प्रारम्भिक १५-२० वर्षों में ही इनकी विलक्षण प्रतिभा, अद्‌भुत कवित्त्व-शक्ति तथा आशु-कविता करने की असाधारण क्षमता के कारण इन्हें अनेकानेक उपाधियों एवं सम्मान से विभूषित किया जाता रहा। इन्हें यदि इनके समस्त उपाधियों के साथ कहीं उल्लिखित करना हो तो इनके अभिधान से पहले **बिहारभूषण, भारतभूषण, भारतरत्न, भारतभास्कर, घटिकाशतक, शतावधान, धर्माचार्य, महामहोपदेशक, सुकवि, साहित्याचार्य, पण्डित अम्बिकादत्त व्यास** आदि लिखना पडेगा। १० वर्ष का बालक इतने सहज तरीके से कविता कर लेगा और इसकी कविता इतनी स्तरीय हो सकेगी; इस पर कोई विश्वास करने को तैयार नहीं होता था। परन्तु कवित्त्व-शक्ति क्या बाजार में बिकने वाली वस्तु है ? जिसे खरीद कर घर ले जाया जाय और घोर कर अपने बच्चों को पिला दिया जाय ? वस्तुतः यह तो पूर्वजन्म के संस्कार से सम्बद्ध होती है, जिसे हम 'अदृष्ट शक्ति' अथवा प्रतिभा कह सकते हैं और यदि वह अल्पावस्था में ही किसी बालक में दीख पड़े तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है ? व्यास जी की जिन रचनाओं के नामोल्लेख साहित्य के इतिहास-ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं, उनकी संख्या लगभग ७०-७२ के आस-पास की है। इनमें भी कुछ तो अपूर्ण तथा कुछ अप्रकाशित ही हैं। इनकी संस्कृत-रचनाएँ लगभग २६ के करीब हैं, जिन्हें निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

(क) भक्ति :

१. गणेशशतक,
२. सहस्रनामरामायण (अनेक स्तोत्रों से संवलित)
३. रत्नपुराण (अपूर्ण)

(ख) धार्मिक रूढ़ि के विरोध से सम्बद्ध :

४. गुप्तशुद्धिप्रदर्शन
५. अवतारकारिका

(ग) दर्शन :

६. सांख्यसागर-सुधा
७. पातञ्जलप्रतिबिम्ब
८. दुःखद्रुमकुठार

(घ) हास्यव्यंग :

९. द्रव्य-स्तोत्र

---

[१] भारतेन्दु मण्डल, लेखक - श्री ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - ८६-९५.

(ड.) स्वयं के प्रौढ़ प्रतिभा से सम्बद्ध :
१०. कुण्डलीदीपक
११. समस्यापूर्ति-सर्वस्व (अपूर्ण)
(च) काव्यशास्त्र :
१२. छन्दःप्रबन्ध (अपूर्ण)
१३. अनुष्टुब्लक्षणोद्धार
१४. गद्यकाव्यमीमांसाकारिका
(छ) संस्कृत प्रचार-प्रसार :
१५. रत्नाष्टक
१६. कथाकुसुम
१७. संस्कृत-अभ्यास-पुस्तक (दो भागों में)
१८. प्राकृत प्रवेशिका
१९. बालव्याकरण
(ज) इतिहास :
२०. इतिहास-संक्षेप
(झ) गणित :
२१. रेखागणित (पद्यबद्ध रचना)
(त्र) नाटक :
२२. सामवतम्
२३. धर्माधर्मकलकलम्
२४. मित्रालापः
(ट) गद्य-काव्य :
२५. शिवराजविजय (संस्कृत साहित्य का अपूर्व उपन्यास)
(ठ) संस्कृत-हिन्दी मिश्रित :
२६. पुष्पोपहार
(ड) अनूदित साहित्य : स्मरणीय है कि इन्होंने निम्नलिखित संस्कृत ग्रन्थों का अनुवाद भी किया था –
१. सांख्यतरंगिणी
२. तर्कसंग्रह
३. अभिज्ञानशाकुन्तलम्
४. वेणीसंहारम्
५.भाषाऋजुपाठ
६. कथाकुसुमकलिका।[१]

४. महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी :

द्विवेदी जी जिस प्रकार संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् थे वेसे ही मातृभाषा हिन्दी के भी थे। कविता भी ये दोनों भाषा में किया करते थे। इनके द्वारा समस्यापूर्ति भी बड़ी शीघ्रता से की जाती थी। एक बार भारतमार्तण्ड श्री गट्टूलाल जी काशी पधारे थे, इनकी विद्वत्ता, आशु-कवित्त्व तथा शतावधान की शक्ति परम विख्यात थी। काशीस्थ

[१] पण्डित अम्बिकादत्त व्यास : एक अध्ययन, लेखक - डॉ. कृष्ण कुमार, पृष्ठ - २८-३६.

गोपाल मन्दिर में श्री गट्टूलाल ने एक समस्या **'यरलैवाशिषा सह'** दी, जिसकी पूर्ति ककारादि क्रम से होनी चाहिए थी। विद्वानों की उपस्थिति में सुधाकर जी ने इस प्रकार से समस्यापूर्ति की :

क ख गां घा ङ च छा जा झां त्र ट ठां ड ढ णां
द ध नां प फ बौ भं मे यरलैवा शिषा सह।।

इन्होंने संस्कृत में लगभग तीस पुस्तकें लिखी हैं। ज्योतिष तथा गणितशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् होने के कारण इनकी संस्कृत-रचनाओं में अधिकांश रचनाएँ इसी शास्त्र के विभिन्न अंगों से सम्बद्ध हैं। ज्योतिष की कुछ प्राचीन कृतियों पर इन्होंने गम्भीर टीकाएं भी लिखी हैं। आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार : "काशीवासी महामहोपाध्याय सुधाकर जी एक बहुत ही बड़े प्रतिभाशाली ज्योतिषी तथा गणितज्ञ थे। उत्तर भारत में ज्योतिष तथा गणित के विपुल प्रचार का श्रेय इनके शिष्यों को है। इन्होंने अनेक प्राचीन ज्योतिष-ग्रन्थों को संशोधित कर उनकी टीकाएं लिखी हैं और अर्वाचीन उच्च गणित पर भी स्वतंत्र ग्रन्थ लिखे हैं इनके अधिकांश ग्रन्थ संस्कृत-भाषा में ही लिखे गए हैं जिनमें-

१. दीर्घवृत्त लक्षण
२. विचित्र प्रश्न
३. वास्तव चन्द्रशृङ्गोन्नति साधन
४. द्युत्तरचार
५. पण्डितप्रभाकर
६. भाभ्रमरेखा-निरूपण
७. धराभ्रम
८. ग्रहण-करण
९. गोलीय रेखागणित
१०. यूक्लिड की ६ वीं, ११ वीं और १२ वीं पुस्तकों का संस्कृत में श्लोकबद्ध अनुवाद
११. **गणकतरंगिणी** मुख्य है। इसके अतिरिक्त आपने *यंत्रराज, लीलीवती, बीजगणित, करण-कुतूहल, पञ्चसिद्धान्तिका, सूर्यसिद्धान्त, ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त, महासिद्धान्त, याजुष और आर्च-ज्योतिष तथा ग्रहलाघव* आदि पर टीकाओं का निर्माण किया है।[१]

इन टीकाओं के अतिरिक्त आपने हिन्दी में चलन-कलन, चलराशिकलन और समीकरण मीमांसा आदि ग्रन्थों की रचना की है। ध्यातव्य है कि द्विवेदी जी ने तुलसीदास की विनयपत्रिका तथा रामचरितमानस के बालकाण्ड का संस्कृत में सुष्ठु अनुवाद प्रस्तुत किया है। बापूदेव शास्त्री जी के पेंशन लेने के बाद सन् १८८९ में आप संस्कृत कालेज के प्राध्यापक हुए और इसके दो वर्ष बाद ही आपको क्वीन विक्टोरिया की जुबली पर महामहोपाध्याय की पदवी दी गई।[२]

५. गोस्वामी श्री राधाचरण जी :

यद्यपि गोस्वामी जी की हिन्दी-रचनाओं में अनेक नाटकों, उपन्यासों तथा शिक्षा सम्बधी पुस्तकों को परिगणित किया जाता है; परन्तु संस्कृत-भाषा पर अच्छा अधिकार होने के कारण आपने अंशतः संस्कृत-साहित्य को भी समृद्ध किया है। संस्कृत-गीतिकाव्यों में **'श्रीगोपिकागीतम्'** आपकी एक प्रसिद्ध कृति है। आपने इस प्रकार के अन्यान्य कई छोटे-छोटे ग्रन्थ संस्कृत में लिखे हैं।

---

[१] संस्कृत शास्त्रों का इतिहास, लेखक - आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ - ८१.

[२] भारतेन्दु मण्डल, लेखक - ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - १३३-१३९.

६. पण्डित परमानन्द भट्ट :

उत्तर प्रदेश के चरखारी निवासी पण्डित परमानन्द जी यद्यपि उपर्युक्त मण्डली के सदस्यों में कहीं भी परिगणित नहीं हो सके हैं, परन्तु इतिहास किञ्च समीक्षा ग्रन्थों के आधार पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि परमानन्द भट्ट को भारतेन्दु बाबू ने अपनी मण्डली के सदस्य होने की मौखिक स्वीकृति प्रदान की थी। अत्यल्प कालखण्ड के लिए ही सही परमानन्द जी ने इस मण्डली को सुशोभित किया और भारतेन्दु मण्डली के संस्कृत सेवी विद्वान् के रूप में संस्कृत-साहित्य की श्रीवृद्धि की। आपकी रचनाओं में हिन्दी-साहित्य के प्रसिद्ध महाकवि बिहारी लाल का ध्वनि काव्य **'बिहारी-सतसई'** के संस्कृत अनुवाद को संकेतित किया जा सकता है। परमानन्द जी ने कविवर बिहारी की इस रचना के समस्त सात सौ दोहों को संस्कृत के **'दोहा छन्द'** में ही अनूदित किया है और साथ ही अपने उन अनूदित समस्त संस्कृत दोहों की एक विद्वत्तापूर्ण टीका भी कर डाली है, जो **'शृङ्गारसप्तशती'** के नाम से जाना जाता है।[१]

इस प्रकार हम देखते है कि भारतेन्दु बाबू की मण्डली में कुछ ऐसे भी सदस्य थे जिन्होंने संस्कृत-साहित्य की विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी उठाई और इस भाषा के साहित्य में भी अपनी सशक्त स्थिति सुनिश्चित कर ली। भारतेन्दु जी की मण्डली में उपर्युक्त संस्कृत-विद्वानों के अतिरिक्त ऐसे अनेक सदस्यों के नाम गिनाए जा सकते हैं; जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से नहीं तो परोक्ष रूप से अवश्य ही संस्कृत-साहित्य का प्रचार-प्रसार किया है, जिनमें बाबू जी की मण्डली के इन सदस्यों के नाम साधिकार लिए जा सकते हैं : **१.** सर्वश्री केशवराम भट्ट **२.** प्रताप नारायण मिश्र **३.** बालकृष्ण भट्ट **४.** रामकृष्ण वर्मा तथा **५.** लाला सीताराम जी।[२]

निष्कर्ष

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतेन्दु बाबू की मण्डली में जिन १४-१९ सदस्यों की गणना की जाती है उनमें उपर्युक्त सदस्यों के अतिरिक्त समूचे भारतवर्ष के उन सभी विद्याव्यसनियों का नामोल्लेख किया जा सकता है जिन्होंने समय समय पर इस प्रसिद्ध मण्डली की अल्पकालीन सदस्यता ग्रहण कर संस्कृत-साहित्य को समृद्ध करने में अपनी महती भूमिका निभाई।

सन्दर्भग्रन्थसूची

१. उपाध्याय, आचार्य बलदेव,१९८३. *संस्कृत शास्त्रों का इतिहास,* शारदा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
२. कुमार, डॉ. कृष्ण, १९७१. *पण्डित अम्बिकादत्त व्यास: एक अध्ययन,* प्रकाश बुक डिपो, बरेली।
३. दास, राधाकृष्ण, १९७६. *भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र,* हिन्दी समिति, लखनऊ।
४. बसु, नगेन्द्रनाथ, (सम्पा.) १९३५. हिन्दी विश्वकोष (भाग-१२), कलकत्ता।
५. ब्रजरत्नदास, २००६ (विक्रमी). *भारतेन्दु मण्डल,* कमलमणि ग्रन्थमाला, काशी।

[१] हिन्दी विश्वकोष, संपादक - नगेन्द्रनाथ बसु, भाग -१२, पृष्ठ -२३६.

[२] भारतेन्दु मण्डल, लेखक - ब्रजरत्नदास, पृष्ठ - १३३-१३९.